D.El.Ed 2nd sem

Present Indian Society and Elementary Education

1 May 2020
Friday

वर्धा शिक्षा नीति (1937)

Wardha Education Policy

महात्मा गाँधी ने अपने 'शैक्षिक विचारों पर खुली बहस कराने' के उद्देश्य से '23 अक्टूबर 1937' को वर्धा में 'अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन का आयोजन' किया। इसमें देश के 'साहित्यकारों', 'शिक्षा मर्मज्ञों', 'समाज सुधारकों' और 'राष्ट्रीय नेताओं' ने भाग लिया। इस सम्मेलन को ही 'वर्धा शिक्षा सम्मेलन' कहा जाता है। इस योजना पर विचार-विमर्श के अग्रलिखित सुझाव या संस्तुतियाँ प्रस्तुत की थी।

⇒ 7 वर्ष आयु तक निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाये।
⇒ शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
⇒ बच्चों को शिल्प-कौशल को कौशल सिखाने की व्यवस्था की जाये।
⇒ बच्चों को हस्त-शिल्प शिक्षा उनके वातावरण से सम्बन्धित होनी चाहिए।

'डॉ० जाकिर हुसैन' की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गयी, जिसने इस प्रणाली को कार्यक्रम में परिणित करने के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रस्तुत किये –

1- प्रथम प्रतिवेदन – (First Report) यह प्रतिवेदन दिसम्बर सन् 1937 में प्रस्तुत किया गया। इसके अन्तर्गत शिक्षा योजनाओं के सिद्धान्तों, उद्देश्यों, शिक्षकों, विद्यालय, संगठन, प्रशासन, निरीक्षण, हस्त-शिल्प जैसी पाठ्यक्रम व्यवस्थाओं का निर्णय लिया गया।

2- द्वितीय प्रतिवेदन – इसके अन्तर्गत हस्त-शिल्प सम्बन्धी व्यापक पाठ्यक्रम तैयार किया गया। जिसमें मिट्टी का कार्य, कताई-बुनाई, लकड़ी का कार्य, कागज एवं गत्ते का कार्य आदि को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया।

Scanned with CamScanner

यह रिपोर्ट सन् 1938 में प्रस्तुत की गयी।
इसे बुनियादी शिक्षा, नई तालीम, बेसिक शिक्षा, वर्धा योजना
आदि नामों से पुकारा गया।

Scanned with CamScanner